भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान 2021
(13 अप्रैल 2021 से 24 जुलाई 2021)

भारत में हजारों साल से खेती हो रही है। हमारी प्राचीन खेती में प्राकृतिक साधनों अर्थात पानी, सूक्ष्मजीव, गोबर व गोमूत्र की सहायता से धरती और फसल की गुणवत्ता बनाए रखने की परंपरा रही है। वेदों के समय से हम मानते हैं कि भूमि हमारी माता है। इस ज्ञान परंपरा को भूलकर भूमि का शोषण करने से न तो खेती का भला होगा न किसान का और न ही मानवता का। इसमें न केवल किसानों को बल्कि देश के हर व्यक्ति को भूमिका निभानी होगी। इसलिए सारे देश में भूमि पूजन उत्सवों का आयोजन किया जा रहा है।

भूमि पूजन उत्सव

पूर्व तैयारी

- गांव में भूमि पूजन के उत्सव का स्थान निश्चित करना शुभ स्थान जैसे देवालय सामाजिक केंद्र आदि जहां सभी आ सकते हो।
- उत्सव वाले स्थान की स्वच्छता सभी मिलकर करें।
- उत्सव के एक दिन पूर्व सभी किसान बंधु अपने पर घर मिट्टी मुट्ठी एक की खेत अपने- लाएं।

उत्सव विधि

- उत्सव के दिन सभी कृषक अपने खेत से लाई हुई मिट्टी को पूजन स्थल पर लेकर सपरिवार आयेंगे।
- पूजन के स्थान पर एक स्वच्छ वस्त्र बिछाकर उस पर सभी की लाई हुई मिट्टी एकत्र करेंगे।
  मिट्टी के ढेर पर कलश रखना उसमें जल डालना। कलश को पेड़ के पत्तों से सजाना। कलश के ऊपर नारियल रखना। फूल पत्ती से पूजन स्थल को सजाना।
- बछड़ा सहित एक गोमाता को पूजन स्थल पर लाना।

पूजन विधि

- न्यूनतम तीन कृषक परिवार सपत्नीक पूजन के लिए आगे बैठे।
  मिट्टी और कलश की गंध, अक्षत (चावल), पुष्प से पूजन करना।
- गो पूजन करना।
- पूजन में आगे बैठे कृषक परिवार बाएं हाथ में जल से भरा पात्र रखेंगे और पुष्प से मिट्टी एवं कलश पर जल का अभिषेक करेंगे। जलाभिषेक करते समय नीचे लिखे मंत्रों को और अर्थ को कोई एक व्यक्ति उच्च स्वर में बोलेंगे।

मंत्र	अर्थ
माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।	भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं।
गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।	समस्त प्राणिमात्र का सुपोषण करने वाली अजेय, गंधवती पृथ्वी को गोमय का उपयोग कर हम नित्य पुष्ट रखेंगे।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।	जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं

सा नो भूमिस्त्विर्षिबलम राष्ट्रे दधातूत्तमे।	माता भूमि हमारे उत्तम राष्ट्र (भारतवर्ष) मे तेज और बल स्थापित करे।
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमंत: शिशिर वसंत: । ऋतवस्ते,विहिता हयनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम।।	हे पृथ्वी भूमे, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिरो वसंत यह छह ऋतुए, वर्षसमूह, दिन और रात्रि, यह सभी विधाता के द्वारा तुम्हारे लिए बनाए है। अतः यह सभी हमारे मनोरथ को पूरा करे।
ॐ द्यौः शान्तिरंतरिक्षम शान्ति:, पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवा: शांतिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वं शान्ति:, शान्ति रेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।	द्यो लोक शान्त हो, अंतरिक्ष शांत हो, पृथ्वी शांत हो, जल शांत हो, औषधियां शांत हो, वनस्पतियां शांत हो, समस्त देवता शांत हो, ब्रह्म शांत हो, सब कुछ शांत हो, शांत ही शांत हो और मेरी वह, निरन्तर बनी रहे।
भूमिः स्वर्गताम यातु, मनुष्यो मनुष्य देवता हो। धर्म यातु देवताम। धर्मो सफलताम यातु, नित्यं यातु शुभोदयम।।	भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो, धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।।

- धरती माता की जय....।
- गो माता कीजय.....।
- ग्राम देवता जय....की (देवता स्थान)।
- भारत माता की जय।

संकल्प

सूचना : कृपया यह संकल्प एक व्यक्ति ऊंचे आवाज मे पढ़ेगा। बाद मे इस व्यक्ति ने पढ़ा हुआ संकल्प बाकी उपस्थित व्यक्ति ऊंचे आवाज मे उच्चारण करेंगे।

भारत मेरा देश है।

मेरे देश मे मेरा स्थान - ग्रामीण या शहरी - कही भी हो, भारतीय संस्कृति मे अभिप्रेत, भूमि के प्रति मातृभाव को धारण करने के लिए मै सदैव कटिबद्ध हूँ।

धरती माता के प्रती मेरी आदरात्मक भावना मेरे क्रियाओं से एवं कर्तव्य पालन से प्रतीत होगी।

भूमि सुपोषण के प्रति मेरा आजीवन योगदान इस प्रकार से होगा,

* मिटटी का क्षरण रोकना;
* मिटटी के संवर्धन के उपाय कार्यान्वित करना;
* रासायनिक खाद, रासायनिक रोग एवं कीटनाशकों का उपयोग नहीं करना;
* कृषि सिंचाई में पानी का अपव्यय टालना; एवं,
* मेढ़ पर पेड़ लगाना।

इन कर्तव्यों के साथ भूमि सुपोषण के अन्य विकल्प जैसे कि, भूमि के लिए हानिकारक पदार्थ, उदाहरणार्थ प्लास्टिक, थर्मोकोल इत्यादि, का न्यूनतम उपयोग करना; भूमि के लिए हानिकारक

पदार्थों का निबटारा सुयोग्य पध्दति से करना; कागज एवं अन्य वस्तुए, जो बनाने के लिए वृक्षा संहार होता है, उनका अत्यावश्यक हो तो ही उपयोग करना; इन वस्तुओं के पुन: उपयोग के प्रति सचेत रहना एवं, वृक्षारोपण गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होना। इन सभी विकल्पों का मै पूरी निष्ठा से पालन करूंगा। इसी मे मेरे राष्ट्र का एवं भूमि माता का हित सम्मिलित है।

जय हिंद।

उदबोधन

(सूचना: कृपया, यह उदबोधन एक व्यक्ति ऊंचे आवाज मे पढ़ेगा।)

सदियों से भारत एक समृध्द, सुसंपन्न, पर्यावरण प्रेमी राष्ट्र रहा है। भारतीय दृष्टिकोण एकात्म विश्वदृष्टि में विश्वास रखता है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि, प्रकृति और पर्यावरण के मध्य अविभाज्य एवं अन्योन्याश्रित संबंध पाया जाता है । हम प्रकृति के प्रति सहअस्तित्व, सामंजस्य, और सौहार्द के साथ मातृत्वभाव युक्त सम्मान दृष्टि रखते है। भूमि पर पहाड़, चट्टान, मिटटी-पत्थर, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे व मनुष्य हैं। ऐसे सभी जीवित एवं अजीवित समुच्चय को भूमि कहते है। गत 200 वर्ष के कालखंड में भूमि के प्रति दृष्टिकोण में न भूतो न भविष्यति बदलाव आया है। सामान्य स्तर पर यह धारणा बनाई गई है की भूमि एक आर्थिक स्त्रोत है जिस से ज्यादा से ज्यादा उत्पादन निकालना है। परिणामतः भूमि माता का शोषण प्रारंभ हुआ। वर्तमान मे, हमारी भूमि चिंताजनक स्थिती मे है। राष्ट्रीय स्तर पर 97.40 दशलक्ष हेक्टेयर भूमि अवनत है, जो हमारे कुल भौगोलिक क्षेत्र के लगभग 30% है। मिट्टी की ऊपरी परत के क्षरण की वार्षिक गति 15.35 टन प्रति हेक्टेयर है। अभी उचित समय है कि हम भारतीय कृषि चिंतन को एवं भूमि सुपोषण संकल्पना को यथोचित रूप में पुनः स्वीकार करे। हमे निर्धारित करना है कि वर्तमान में चल रहा भूमि का शोषण मात्र रोकना ही नही, बदलना है। भूमि सुपोषण के संकल्प मे मात्र कृषकों का योगदान रहेगा यह अपेक्षा अनुचित है। भूमि सुपोषण यह हमारे राष्ट्र के सभी नागरिकों का कर्तव्य है। गत कुछ वर्षों से भूमि सुपोषण की संकल्पना को दृश्य रूप मे लाने के लिए तैयारी हो रही थी। भारत मे लगभग सभी राज्यों मे कृषक, महिला कृषक, वैज्ञानिक, शासकीय अधिकारी, राजकीय नेता, धार्मिक संस्थाओं के अधिकारी, सर्वसाधारण नागरिक आदि से व्यापक एवं सघन संपर्क किया गया। परिसर भेट, राष्ट्रीय संगोष्ठी, प्रलेखन कार्यशाला इत्यादि माध्यमों से भूमि सुपोषण एवं संरक्षण का राष्ट्र स्तरीय जन अभियान संकल्पित किया गया है। इस अभियान को मूर्त रूप कुछ इस पध्दति से दिया जा सकता है:

* अधिकाधिक ग्रामो में भूमिपूजन उत्सवों का आयोजन।
* प्राकृतिक, परंपरागत पद्धति द्वारा भूमि को सुपोषित रखने वाले किसानों का सम्मान करना एवं अनुभव कथन आदि कार्यक्रमों का आयोजन हो।
* ग्राम के भूमि का विस्तृत मानचित्र बनाना जिस मे विभिन्न प्रकार की भूमि, समतल ढलानवाली, रंग अनुसार, गहराई अनुसार वर्णन करना।
* भूमि आरोग्य और फसल चक्र के संदर्भ मे किसानों से परिचर्चा हो।

* गाँव परिसर के भूमि पूजन संबंधित उत्सव, त्यौहार, गीतों का संकलन आदि का आयोजन करे।
* छोटे हस्तचालित, पशुचालित यंत्र प्रदर्शनी आदि आयोजित करे।
* कृषि महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों में किसान वैज्ञानिक तथा कृषि वैज्ञानिकों के साथ वार्तालाप का आयोजन हो।
* भूमि आरोग्य, सुपोषण संबंधित विचार गोष्ठी, कृषि वैज्ञानिक चर्चासत्र आदि का आयोजन हो।
* कृषि विज्ञान केंद्र में भूमि सुपोषण संबंधित चर्चासत्र आयोजित हो।
* नगरीय क्षेत्रों में प्राकृतिक पद्धति द्वारा निर्मित कृषि उपज कि व बिक्री कि व्यवस्था हो।

अनुकरणीय कृषि कार्य

1.भूमि को विश्राम देना: प्रति वर्ष 1 माह के लिए भूमि को विश्राम दें तथा उस समय भूमि फसल- अवशेष से ढंकी रहे।

2. वर्षा का अनुमान समझना: अपने-अपने क्षेत्र के परंपरागत ज्ञान पर आधारित जैसे पशु, पक्षियों, चीटियों की हलचल आदि तथा आधुनिक मौसम विज्ञान के अनुभव के आधार पर इस वर्ष का वर्षा अनुमान समझना तथा उसके अनुसार कृषि कार्य की योजना तैयार करना। मुख्य तौर पर भारी वर्षा का समय और वर्षा खंड का संभावित समय समझना अनिवार्य है।(इसके लिए अपने अपने जिले के कृषि अधिकारी तथा कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क कर सकते हैं)

3. मृदा मिट्टी तथा जल संरक्षण के उपयुक्त उपायों को प्रोत्साहन:

* वर्षा की हर एक बूंद खेत में जहां गिरती है, वही सोख ली जाए और धरातल पर बहने के बजाय नीचे की ओर मुड़ जाए और भूमिगत जल में जाकर मिल जाए
* लक्ष्य यह होना चाहिए कि अधिकांश खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में रहें।
* कंटूर (मेड बंधान) पद्धति से फसल लगाना, भूमि को वानस्पतिक उपचार से आच्छादित किया जाए।
* अपने खेत के ढलान को ध्यान में रखकर जल को रोकने के लिए सुयोग्य स्थान बनाए जाएं।
* मेडपर बड़े वृक्ष और घास लगाएं।

4.भूमि और फसल की आवश्यकताओं की पूर्ति:

* हरी खाद का अर्थ भूमि में हरी जीवांश मिलाना है यह कोई भी दलहनी फसल जो तीव्र गति से बढ़ती हो अथवा ढैंचा, सनई, ग्वार आदि उगाकर फिर उन्हें खेत में मिलाना है
* अपने-अपने परिसर में उपलब्ध प्रशिक्षण द्वारा गोबर खाद, कंपोस्ट खाद, केंचुआ खाद आदि अपने ही घर पर बनाकर भूमि तथा फसल सुपोषण हेतु खेत में डालना है।
* अपने अपने परिसर को ध्यान में रखकर अपनी खेती में सही फसल चक्र अपनाना चाहिए।
* एक ही स्थान पर एक फसल चक्र अपनाने से रोग एवं कीट बढ़ते हैं उदाहरण:- अरहर के खेत में पुनः अगले वर्ष अरहर नहीं लगाना चाहिए।
* खेत में खरपतवार को नष्ट करने के लिए बड़े यंत्र या दवाइयों का उपयोग नहीं करना चाहिए। खरपतवार को नष्ट करने के लिए डोरा, हस्त निंदाई, छोटे हस्तचलित पशुचालित यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए।
* हाइब्रिड की तुलना में देशज, चयनित तथा उन्नत बीजों को बढ़ावा दें।
* ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, धान, दलहन, पालदार वृक्षो को प्रोत्साहन दें।

5.कीट रोग प्रबंधन:

* मिश्रित फसल, बहुफसली पद्धति एवं अंतवर्ती फसल पद्धति को अपनाएं। इससे हानिकारक कीटों का प्रकोप कम होता है।
* जैव नियंत्रक जैसे कि- गोमूत्र, निंबोली, काढ़ा, पाँचपर्णी अर्क, दशपर्णी अर्क इनका अधिकाधिक उपयोग करें। जैव कीट नियंत्रक घर पर ही बनाने की विधि को समझें।

6.कृषि यांत्रिकीकरण:

* अपने परिसर एवं कृषि पद्धति के अनुरूप मनुष्य और पशु चालित छोटे यंत्र तथा औजारों को बढावा देना।

7.श्रम साधना:

* मजदूरों के साथ मिलकर कार्य करना उनका प्रशिक्षण-प्रबोधन करना।
* परिवार के लोगों ने सभी कृषि कार्यों में सहयोग देना।

8.प्रशिक्षण:

* अपने परिसर में प्रयोग करने वाले यशस्वी कृषकों से प्रशिक्षण लेना चाहिए।
* अपने जिले के कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क बनाकर प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।
* छोटे और सीमांत किसानों ने कोई भी नए प्रयोग पहले छोटे क्षेत्र पर करते हुए स्वयं का अनुभव लेकर आगे बढ़ाना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख: दीनदयाल शोध संस्थान-कृषि विज्ञान केंद्र, मझगवां, जिला सतना (म.प्र.), मोबाइल नं. 9425887138, ईमेल-kvksatna@dri.org.in